12

ऐसा करोगे तो कभी ठोकर नहीं खाओगे (2 पतरस 1:3-21)

आज हम जिधर भी देखें, ऐसा लगता है कि हमें समझाने की कोशिश करते संदेशों का चौतरफा हमला हो रहा है कि हमें सफ़ेद दांत या बड़ी कारों की आवश्यकता है, यानी हमें और अच्छे कपड़ों या अच्छे सामान रखने का हक है। विज्ञापन देने वालों को मालूम है कि वे अपना सामान तभी बेच पाएंगे यदि ग्राहकों को यह मानने पर मज़बूर कर दें कि यह उनके जीवन की आवश्यकता है।

इसी प्रकार, झूठी शिक्षा देने वाले लोग मसीही लोगों को यह यकीन दिलाकर प्रभावित करते हैं कि उनमें किसी आत्मिक आशीष की कमी है। जब पतरस ने अपना दूसरा पत्र लिखा तो बहुत से शिक्षक नया प्रकाश पाने का दावा कर रहे थे।

ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी बनो (1:3-7)

पतरस ने अपने पाठकों को यकीन दिलाया कि उन्हें वह सब मिल चुका है, जिसकी उन्हें आवश्यकता है। ''उसी की पहचान के द्वारा जिसने हमें अपनी महिमा और सदगुण के अनुसार बुलाया है'' (1:3)। पतरस और उसके जैसे अन्य लोगों के संदेश के द्वारा, एशिया माइनर के मसीही लोग मसीह की भरपूर आशिषों के वारिस बन गए थे।

अपने मूल शिक्षकों को सुनने और संदेश को ग्रहण करने के द्वारा, मसीही लोग, जिन्हें पतरस ने लिखा, परमेश्वर के साथ एक होने के लिए आत्मिक जीवन के लिए पैदा हुए थे। जो वचन उन्होंने ग्रहण किया था, उसने उन्हें पाप का सामना करने और छुड़ाए हुए तथा पवित्र लोगों के रूप में जीवन बिताने के लिए आवश्यक संसाधन दिए थे। क्या अन्य शिक्षकों ने उन्हें परमेश्वर तक अतिरिक्त पहुंच के लिए दिया था या उन्हें नैतिकता का कोई नया मापदण्ड दिखाया था? पतरस ने अपने पाठकों को आश्वस्त किया कि जो संदेश उन्हें उससे प्राप्त हुआ था, वह तो परमेश्वर का प्रकाशन था। उनमें किसी बात की कमी नहीं थी।

पौलुस के शब्दों में पतरस के पाठकों को प्रतिज्ञाएं भी मिली थीं और वे प्रतिज्ञाओं के वारिस भी थे, ''... प्रतिज्ञा के विषय में, ... यह सुसमाचार सुनाते हैं कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर, वही प्रतिज्ञा हमारी सन्तान के लिए पूरी की ...'' (प्रेरितों 13:32, 33)। हाल ही के शिक्षकों के आने से पहले, पतरस के श्रोताओं ने मसीह के लहू द्वारा पहले ही पापों की क्षमा का अनुभव ले लिया था। उन्हें यह बहुमूल्य प्रतिज्ञा मिली थी कि प्रभु के महान दिन में उनका उद्धार होगा। झूठे शिक्षकों द्वारा की गई किसी प्रतिज्ञा में उन प्रतिज्ञाओं से बड़ी कोई प्रतिज्ञा नहीं थी, जिसका आनन्द पहले से पतरस के पाठक ले रहे थे।

मसीही लोग आत्मिक रूप से परमेश्वर के साथ एक हैं। पौलुस ने कहा, ''सो उस मृत्यु का

बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें'' (रोमियों 6:4)। परमेश्वर का अनुग्रह ईश्वरीय स्वभाव में योगदान देता है; मसीही व्यक्ति शुद्ध और पवित्र बन जाता है क्योंकि मसीह ने उसके पाप क्षमा कर दिए हैं इस प्रकार वह कामना के द्वारा संसार में पाए जाने वाली गन्दगी से दूर रहता हो। क्या हाल ही में आए लोग मसीही लोगों को ईश्वरीय स्वभाव में उनकी सहभागिता के समान कोई चीज़ दे सकते हैं? जब भी कोई मसीही किसी गुरु को सुनता है जो नया सुसमाचार अर्थात प्रभु के द्वितीय आगमन के नये प्रकाशन या पवित्र शास्त्र की कोई ऐसी व्याख्या जिसे लोगों ने पहले नहीं सुना, होने का दावा करता है तो उसे सावधानी बरतनी होगी। वह रुककर पूछ सकता है, ''क्या आरम्भ से जिस सुसमाचार को मैंने सुना है उसमें कोई कमी पाई गई? क्या इसकी प्रतिज्ञा काफ़ी नहीं?'' अगली आयतों में पतरस ने स्पष्ट कर दिया कि जब मसीही लोगों का स्वभाव भक्तिपूर्ण होगा तो वे परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाओं के वारिस बन जाते हैं। भक्तिपूर्ण व्यवहार का मार्ग 1:5-7 में बताया गया है जो इस पत्र का सबसे प्रसिद्ध और सबसे अधिक दोहराया जाने वाला भाग है।

विश्वास मसीही यात्रा का आरम्भिक बिन्दु है, पर याकूब के शब्दों में, ''विश्वास कर्म बिना मरा हुआ है'' (याकूब 2:26) इसलिए पतरस ने कहा, ''विश्वास में नैतिक श्रेष्ठता [भलाई, NIV] जोड़ लो'' (1:5)। मसीही लोगों को अपने विश्वास में उन गुणों को जोड़ने के लिए कहा गया है जो नैतिक ईमानदारी और निजी निष्ठा के लिए आवश्यक हैं। नैतिक श्रेष्ठता या सद्‌गुण में हमें ''ज्ञान'' (1:5) को जोड़ना आवश्यक है। इस संदर्भ में ज्ञान ''परमेश्वर की बुद्धि'' को कहा गया है जिसका उल्लेख पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 2:7 में किया। यह परमेश्वर के सत्य का ज्ञान और परमेश्वर की महिमा के लिए ज्ञान का इस्तेमाल है। ज्ञान में हमें ''आत्मनियन्त्रण'' (1:6) अर्थात ''संयम'' (KJV) को जोड़ना है। पौलुस ने आत्मा के फलों की अपनी सूची में संयम को शामिल किया (गलातियों 5:23)। सुलैमान की कहावतों में से एक में इस प्रकार लिखा है, ''जिसकी आत्मा वश में नहीं वह ऐसे नगर के समान है जिसकी शहरपनाह नाका करके तोड़ दी गई हो'' (नीतिवचन 25:28)।

संयम में हमें ''धीरज'' (1:6) को जोड़ना है। KJV में (हिन्दी की तरह-अनुवादक) ''धीरज'' है जो सहनशीलता स्वीकृति के विचार को दर्शाता शब्द है। यूनानी शब्द का बोद्ध यहां रूकावटों के बीच में धीरज से सहना है। धीरज से हमें ''भक्ति'' (1:6) को जोड़ना है। भक्ति वह ढंग है जिससे हम परमेश्वर के साथ मेल में रहते हुए कार्य करते हैं, जब हम अपने हर काम में उसको खुश करते और सम्मान देते हैं।

भक्ति में हमें ''भाईचारे की प्रीति'' (1:7) को बढ़ाना है। 1 पतरस 1:22 में इसी यूनानी शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जबकि ऐसे ही शब्द का इस्तेमाल 1 पतरस 3:8 में हुआ है। भौतिक संसार में इसका अर्थ आम तौर पर संसारिक भाई के लिए प्रेम होता है। नये नियम में इसका अर्थ मसीह में भाइयों के बीच प्रेम है।

भाइचारे की प्रीति में, पतरस ने कहा कि हमें ''प्रेम'' (1:7) को जोड़ना है। पौलुस की तरह (1 कुरिन्थियों 13:13), उसने अन्त तक गुणों के राजकुमार को बचाए रखा। यह शब्द इतने बड़े आयामों वाला है कि इसे एक वाक्य में नहीं समझाया जा सकता।

अपने बुलाए और चुने जाने को पक्का करें (1:8-15)

पतरस अपने उद्देश्य से भटका नहीं था कि उसने अपने पाठकों को ज्ञान में बढ़ने में सहायता देनी है ताकि वे झूठी शिक्षा देने वालों के साथ प्रभावशाली ढंग से पेश आ सके। उसने कहा, ''क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएं, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के पहचानने में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी'' (1:8)। जब एक मसीही व्यक्ति (1:5-7) में दिए गुणों के साथ उदारता से अपने जीवन को देता है और जब वह उनको अपने जीवन में अपनाता है, तो उसका स्वाभाविक परिणाम मसीह का ज्ञान होता है। पतरस बातों से नहीं बल्कि व्यवहारिक ज्ञान या समझ की बात कर रहा था। दोनों एक नहीं है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति जिमनास्टिक के बारे में पढ़ सकता है परन्तु जिमनास्टिक को *जान* केवल तभी सकता है यदि जिमनास्टिक करते करते उसने अपने जीवन का अधिकतर भाग लगा दिया हो।

आत्मिक बातें भी ऐसी ही हैं। कोई व्यक्ति धीरज के बारे में पढ़ तो सकता है पर धीरज को और इसके लिए अपनी क्षमता को तभी *जान* सकता है जब उसने धीरज रखा हो। ऐसे ही वह संयम को तभी जान सकता है जब उसने संयम बरता हो। धीरज, संयम तथा अन्य मसीही अनुग्रह को जानने का अर्थ मसीह को जानना है। करने से हम जानते हैं। यदि ये बातें हम में बनीं रहें, तो प्रेरित ने आश्वासन दिया कि यह हमें अपने प्रभु के ज्ञान में प्रभावित और उपजाऊ बनाएंगी। जो कोई मसीह का नाम लेता और मसीही शिक्षा के इन व्यवहारिक प्रदर्शनों को नहीं समझ पाता वह अंधा है और भूल गया है (यानी उसे पता नहीं है) कि उसे उसके पिछले पापों से शुद्ध किया गया है (1:9)।

परमेश्वर ने एक जाति को बुलाया, चयन किया और चुना है ताकि वह उसका नाम पहने उसके लोग कहलाएं। यह वह अवधारणा है जो पुराने नियम की डॉक्ट्रिन की तह तक जाती है। परमेश्वर के चुने हुए लोगों को मूसा द्वारा व्यवस्था दे दिए जाने के बाद, एक व्यक्ति को जन्म की खूबी के द्वारा चुने हुए लोगों में गिना जाता था। मसीह ने अपनी नई वाचा स्थापित कर दी है इसलिए अब हम विश्वास के द्वारा चुन हुए लोगों में गिने जाते हैं। पतरस की चिंता यह थी कि उसके पाठकों के ज्ञान की कमी उनके चुने हुए लोगों में से गिरने का कारण बनेंगी (1:10)। वह शिक्षा जिसमें कहा जाता है कि ''एक बार उद्धार हो जाने पर आप कभी खो नहीं सकते'' की बात बाइबल में नहीं मिलती। पतरस ने कहा कि जब हम अपने बुलाए जाने को सुनिश्चित करते हैं (1:10, 11) अर्थात वफ़ादारी से रहते हैं, तो हमारा परमेश्वर के राज्य में शानदार स्वागत होता है। पतरस ने यह स्पष्ट किया कि वह कोई नई बात नहीं बता रहा। उसका एकमात्र उद्देश्य उन्हें वही बात याद दिलाना था, जिसे पहले से जानते थे कि सच है (1:12)। कोई नई बात सीखने से बढ़कर हमें वही बात जिसे हम सच मानते हैं याद दिलाना आवश्यक है। चंचल और कच्चे लोग हमेशा कुछ और, कुछ नया जानने की खोज में रहते हैं। बाइबल हमें दृढ़ता से सच्चाई में मज़बूत करेगी। हर शिक्षा को इसके प्रकाशन से सावधानी से मिलाना चाहिए।

1 पतरस के विपरीत 2 पतरस में पतरस के जीवन की घटनाओं के संकेत हैं जिसे उस सुसमाचार की पुस्तकों में देखा जा सकता है। 2 पतरस 1:14 में उसने यीशु के उन शब्दों की बात की जो उसने उनसे कहे थे।

''मैं तुझ से सच सच कहता हूं, जब तू जवान था, तो अपनी कमर बान्धकर जहां चाहता था, वहां फिरता था; परन्तु जब तू बूढ़ा होगा, तो अपनी हाथ फैलाएगा, और दूसरा तेरी कमर बांधकर जहां तू न चाहेगा वहां तुझे ले जाएगा'' उस ने इन बातें से संकेत दिया कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा (यूहन्ना 21:18, 19)।

पतरस को इस बात की समझ थी कि प्रभु की भविष्यवाणी के पूरा होने का समय निकट है (1:14)।

1:15 में पतरस ने जिस घटना की बात की वह अतीत की नहीं बल्कि भविष्य की उसकी योजनाओं की बात थी। उसने कहा, ''इसलिए मैं ऐसा यत्न करूंगा कि मेरे कूच करने के बाद तुम इन सब बातों को सर्वदा स्मरण कर सको।'' वह अपने पाठकों को अपने मरने के बाद भी वे ''बातें'' याद दिलाए रखना चाहता था जो मसीह ने उसे बताई थीं। ऐसा लगता है कि 1:15 में उसकी मंशा अपने पाठकों के लिए मसीह के जीवन का रिकॉर्ड छोड़ना था। हमारे पास पतरस रचित सुसमाचार नहीं है, परन्तु प्राचीन कलीसिया की साक्षी यह है कि मरकुस रचित सुसमाचार के पीछे का अधिकार पतरस का ही था। यह हो सकता है कि मरकुस रचित सुसमाचार में हमें उसी प्रयास का परिणाम मिला जिसकी प्रतिज्ञा पतरस ने की थी।

प्रभु की सामर्थ और आगमन के अपने ज्ञान में मज़बूत रहें (1:16-21)

आयत 16 कहती है, ''क्योंकि जब हमने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ का, और आगमन का समाचार दिया था तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं किया था बरन हमने आप ही उसके प्रताप को देखा था।'' पतरस ने अपनी शिक्षा के पीछे के अधिकार और झूठे शिक्षकों के अधिकार के अन्तर को स्पष्ट कर दिया। उनकी शिक्षा चतुराई से गड़ी हुई कहानियां थीं। 1:1-21 में पतरस ने उन्हें उन कहानियों के बजाय प्रेरितों के संदेश को चुनने के दो महत्वपूर्ण कारण बताए।

पहला, पतरस एक प्रत्यक्षदर्शी था। 1 पतरस 5:1 तथा 2 पतरस 1:16 दोनों जगह, पतरस ने अपने अधिकार के आधार के रूप में अपने मसीह का गवाह होने की ओर ध्यान दिलाया। 1 पतरस में उसने किसी विशेष घटना की बात नहीं की, पर 2 पतरस में की (1:17, 18)। जिस घटना को उसने चुना, बिना किसी शक के यह वह घटना थी जिसमें उसने व्यक्तिगत तौर पर उन मसीही लोगों के साथ दोहराया था। पतरस याकूब और यूहन्ना प्रभु के समय रूपांतर पर्वत पर उसके साथ ही थे जब मूसा और एलिय्याह दिखाई दिए थे और उससे बातें कर रहे थे। तक एक बहुत ही नाटकीय घटना घटी। तेज़ से भरी महिमा ने ऊंचे से बात की थी और यीशु की गवाही दी थी: ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं।'' मत्ती 17:1-5, मरकुस 9:2-7 और लूका 9:28-35 में इस घटना को लिखा गया है। इन तीनों जगह परमेश्वर की ओर से एक अतिरिक्त कथन था कि ''इसकी सुनो''।

दूसरा, पतरस के संदेश में नबियों की गवाही थी। झूठी शिक्षा देने वालों के पास न तो प्रत्यक्षदर्शी विवरण थे और न ही परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं का समर्थन। पतरस ने अपने पाठकों से नबियों की बात पर ध्यान देने को कहा। 1:20 में KJV का अनुवाद कुछ उलझाने वाला

है। यह इस प्रकार है, ''धर्मपुस्तक की किसी भविष्यवाणी की कोई निजी व्याख्या नहीं है।'' पतरस हमें यह नहीं बता रहा था कि हमें धर्मशास्त्र की व्यक्तिगत व्याख्या नहीं करनी चाहिए। जब तक हम इसकी व्याख्या नहीं करते तो हम परमेश्वर के वचन के अर्थ को अपने लिए या दूसरों के लिए कैसे समझ सकते हैं? वह यह कह रहा था कि भविष्यवाणी किसी व्यक्ति के अपने कार्य करने अर्थात निजी पहल की बात नहीं है। यह तो परमेश्वर ही है जिसने नबियों को प्रेरणा दी थी। उनके संदेश में वजन होने और अधिकार होने का कारण यही है। 1:20 में NIV का अनुवाद इस विचार को और स्पष्टता से व्यक्त करता है: ''... धर्मपुस्तक की कोई भविष्यवाणी नबी की अपनी व्याख्या से नहीं आई।'' NASB कहता है कि ''धर्मपुस्तक की कोई भविष्यवाणी किसी की अपनी व्याख्या की बात नहीं है।''

सारांश

अध्याय 1 में पतरस ने ज्ञान पर ज़ोर दिया। अब प्रेरित की चिंता अपने पाठकों का दुख नहीं था। उसकी चिंता वे झूठे शिक्षक थे जो मण्डली में घुस आए थे और मसीही लोगों से उस जीवन को छीन लेने का खतरा बने हुए थे जो उन्हें अभी अभी मिला था। पौलुस ने उन्हें उन बड़े और बहुमूल्य वायदों का स्मरण दिलाया जो उन्हें मिरास में मिले थे। उसने उन्हें मसीही अनुग्रहों को पहनकर ज्ञान में बढ़ने के लिए कहा जिसमें उन्हें मसीह के ज्ञान में फलदायक बनाना था।

इन मसीही लोगों के लिए इस बात को समझना आवश्यक था कि पतरस को यह अधिकार प्रेरित होने के कारण मिला। उसकी गवाही और इस तथ्य के बीच में एक बड़ा स्पष्ट अन्तर था कि झूठे शिक्षक अभी अभी निकले थे। इसके साथ पतरस ने अपने संदेश के लिए नबियों से समर्थन की अपील की।

हम पतरस की बातों से सबक ले सकते हैं। झूठे शिक्षक पहली सदी तक ही सीमित नहीं थे। पीढ़ी के लिए पवित्र शास्त्र की खोज करना और हर शिक्षा की समीक्षा करना आवश्यक है। आज कलीसिया को बार बार याद दिलाने की आवश्यकता है कि प्रभु ने अपने वचन में ''सब कुछ जो जीवन भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्‌गुण के अनुसार बुलाया है'' (1:3)।